पूछे रसूल सों दोए सुकन, सो साहेब ने किए रोसन।
ए दोनों बात खुदाए से होए, इनको पूजेंगे सब कोए।। ३३ ।।

रसूल साहब के यारों ने यह दो बातें पूछीं कि कयामत कब होगी और बहिश्तें कैसे मिलेंगी? रसूल साहब ने उत्तर दिया कि खुदा खुद इमाम मेंहेंदी बनकर आएंगे। तभी कयामत होगी और दुनियां को बहिश्तें मिलेंगी, इसलिए यह दोनों खुदा से होने वाली हैं। यह होने पर दुनियां उन्हें पूजेगी।

तोफतल कलाम जो है किताब, ए लिख्या तिस बीच आठमें बाब।
उमतें सब पैगंमरों की मिली, सब दिलों आग दोजख की जली।। ३४ ।।

तोफतल कलाम नाम की जो किताब है, उसके आठवें प्रकरण में लिखा है कि जब इमाम प्रगट होंगे, उस समय सभी पैगम्बर, गुरु, धर्माचार्य तथा उनके चेले चिन्ता करने लगेंगे और उनके दिलों में दोजख की आग जलेगी।

जलती सब पैंगंमरोंपे गई, पर ठंढ़क दारू काहू थें न भई।
हाथ झटक के कह्या यों कर, हम सब सरमिंदे पैगंमर।। ३५ ।।

पश्चाताप की अग्नि में जलती हुई दुनियां अपने गुरुओं के पास जाएगी और कहेगी कि आपने हमको स्वर्ग (बैकुण्ठ) और निराकार तक का ही ज्ञान दिया जो अब नष्ट होने वाला है। आप लोगों ने हमें ब्रह्मज्ञान नहीं दिया जिससे हमें शान्ति मिलती। तब सभी धर्माचार्य झटककर कहेंगे कि हम क्या करें? हम आज शर्मसार हैं।

सब दुनियां को एही दिया जवाब, महंमद इनको लेसी सवाब।
सब दुनियां जलती महंमद पे आई, दोजख आग रसूलें छुड़ाई।। ३६ ।।

सब दुनियां वालों को उनके गुरुओं ने यही जवाब दिया और कहा कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ही कुलजम सरूप की वाणी देकर सबको भव से पार करेंगे, इसलिए तुम उन्हीं के पास जाओ। पश्चाताप की अग्नि से जलती हुई दुनियां श्री प्राणनाथजी के चरणों में आई। तब रसूल साहब की आखिरी हकी सूरत श्री प्राणनाथजी ने उनको दोजख की अग्नि में जलने से बचाया।

सबोंको सुख महंमदें दिए, भिस्तमें नूर नजर तले लिए।
कहे छत्ता अपनायत कर, जिन कोई भूलो ए अवसर।। ३७ ।।

श्री प्राणनाथजी ने कुलजम सरूप की वाणी से निर्मल कर अखण्ड सुख दिए। बाद में अक्षरब्रह्म की नजर योगमाया में बहिश्तों में अखण्ड करेंगे। महाराजा छत्रसाल सबको अपना समझकर कहते हैं कि भाइयो! सुन्दर अवसर आया है। हाथ से मत जाने दो।

हुई फजर मिट गई वाद, भूले बड़ो करसी पछताप।। ३८ ।।

अब अज्ञान का अन्धकार मिट गया है और कुलजम सरूप की वाणी के ज्ञान का सवेरा हो गया है। अब जो भूलेगा, उसको बड़ा पश्चाताप करना पड़ेगा।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। २२९ ।।

लिख्या सिपारे आखिरे सात दसमी सूरत, रोसन कुरान लिखी हकीकत।
मोमिनों का लिख्या मजकूर, सो ए कहूं सब देखो जहूर।। १ ।।

कुरान के आखिरी तीसवें सिपारे की सत्रहवीं सूरत में मोमिनों की बात स्पष्ट लिखी है, जो मैं कहती हूं, दिल की आंखों से देखो।

Nijanand App

पाई खलासी मोमिन, हुआ मकसूद सबन।
ऐसे होवे जो कोई, सांची बंदगीमें सोई।। २ ।।

कुलजम सरूप की वाणी से मोमिनों को माया के बन्धनों से छुटकारा मिला और उनकी समस्त मनोकामनाएं पूरी हुईं। इस तरह का जो अमल करे वही सच्ची बन्दगी करने वाला मोमिन है।

रखो खुदाए का डर, बंदे सिजदे पर नजर।
किया कबूल एह जहूर, दरगाह साहेब के हजूर।। ३ ।।

कुरान में लिखा है कि सिजदा करने पर खुदा से डरते रहो। इस तरह से श्री राजजी से डरकर जो बन्दगी करेगा, वह परमधाम पहुंचकर श्री राजजी के सामने जाएगा।

पैगंमर हजरत, निमाज अदा इन सरत।
ऊपर से आयत आई, तब नजर आसमान से फिराई।। ४ ।।

रसूल साहब नमाज पढ़कर एकान्त में बैठकर आसमान की तरफ देखकर दुआ मांगते थे। तुरन्त ही खुदा की तरफ से आयत आई। हे मुहम्मद! ऊपर क्या देखता है? अपने दिल में देखो और रूह से सिजदा बजाओ। ऐसी आयत आने पर आसमान से रसूल ने नजर उठाकर रूह से सिजदा बजाना शुरू किया।

किया सिजदा मूल वतन, जो दरगाह बड़ी है रोसन।
यों कह्या बीच लवाब, ए हमेसां मूल सवाब।। ५ ।।

अब वह परमधाम (मूल-मिलावा) का चितवन करके अपनी रूह से सिजदा करने लगे, जिससे उन्हें परमधाम के मूल सुखों का लाभ मिला। यह बात लवाब नाम की किताब में लिखी है।

जो बका साहेब का घर, रखो दीदे धनी नजर।
ए सिजदा तब पाइए, खूबी घर की देखी चाहिए।। ६ ।।

अखण्ड परमधाम श्री राजजी महाराज का घर है, इसलिए श्री राजजी के चरणों में सदा अपनी सुरता लगाकर रखो (वाणी में भी कहा है सुरता एक ही राखिए, मूल मिलावा माहें)। जब तुम्हें घर परमधाम देखने की चाहना पैदा होगी, तभी तुम इस तरह से सिजदा करके सुख प्राप्त करोगे।

जब ए हुई खुसाली, तब भूले सिजदे खाली।
निमाज के बखत दिल धर, छूटी दाएं बाएं नजर।। ७ ।।

जब इस तरह से सिजदा करके चितवन करके अखण्ड सुख मिलेगा, तब पानी, पत्थर, आग को पूजने के जब सिजदे समाप्त कर दोगे। मुसलमानों से भी कहा है कि नमाज के वक्त अपनी सुरता को दिल में दृढ़ करके रखो। शैतान कहीं बाहर से आने वाला नहीं है। तुम्हारे अन्दर बैठा है। जो ध्यान नहीं लगने देता, इसलिए शैतान दाएं-बाएं से आने वाला नहीं है। इस तरह से मुसलमानों को भी शरीयत की बन्दगी से छुड़ाया।

हुआ साहेब का करम, पाया भेद बीच हरम।
हुई कबूल निमाज इन हाल, हुए साहेब सों खुसहाल।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज की जब नजरे करम हो गई, तो मूल-मिलावा के सभी रहस्यों का पता चल गया। इस तरह से मूल-मिलावे की हकीकत का जब पता चल जाए तो समझना हमारी नमाज कबूल हो गई। तब धाम धनी श्री राजजी महाराज से मिलकर अखण्ड सुख प्राप्त किए।

Nijanand App

सिर से छूट गया करज, हुए मोमिन बेगरज।
छूटा मूल जो हुकम, हुआ सिजदा हजूर कदम।। ९ ।।

इस तरह का सुख मिलने से मोमिनों से कर्मकाण्ड और शरीयत छूट गई और मोमिन दुनियां से बेगर्ज हो गए। श्री राजजी महाराज ने खेल में उतरने से पहले कहा था कि खेल में जाकर मुझे भूल नहीं जाना। मैं ही तुम्हारा खाविंद हूं। इन वचनों को याद करके मोमिन श्री प्राणनाथजी के स्वरूप को श्री राजजी महाराज मानकर उनके चरणों में सिजदा बजा रहे हैं।

सो ए करता हों मैं तफसीर, जुदे कर देऊं खीर और नीर।
पेहेले था बेहेरुल्हैवान, तब तो तिनमें था फुरमान।। १० ।।

आप श्री प्राणनाथजी महाराज सत और झूठ, माया और ब्रह्म को अलग-अलग कर पहचान करा रहे हैं कि रसूल साहब के आने से पहले सब संसार में हैवानियत (पशु वृत्ति) का ही मनुष्य था। तब उनके बीच कुरान का ज्ञान लाकर सबको शरीयत की राह पर चलाया, परन्तु सभी मुसलमान आपस में लड़ झगड़कर फिरकों में बंट गए और ईमान पर खड़े नहीं रहे।

अब दरिया हुआ हक, इनमें न रहे किसी की सक।
दरिया हक बीच मजकूर, कह्या जाहेर खुसाली नूर।। ११ ।।

अब श्री कुलजम सरूप (जागृत बुद्धि) की वाणी आ जाने से सारे ब्रह्माण्ड के संशय मिट जाने से सब पाक (साफ) निर्मल हो गया है। अब इस संसार सागर में कुलजम सरूप की वाणी से सच्चिदानन्द धाम धनी की पहचान हो गई है। मोमिनों को श्री प्राणनाथजी के मुखारबिन्द की परमधाम की वाणी सुनकर अपार खुशी हो रही है।

सुरत दाएं बाएं भान, सिर आगूं धरिया आन।
खड़ा रहे दोऊ हाथ पकर, सो सके हजूर बातां कर।। १२ ।।

अब अपनी सुरता को अपने घर, कुटुम्ब, परिवार, माया से हटाकर श्री प्राणनाथजी के चरणों में सिर झुकाओ। इस तरह से जो गरीबी, अधीनी लेकर उनके सामने खड़े होंगे, वही परमधाम में श्री राजजी महाराज के आमने-सामने बात कर सकते हैं।

हुआ साहेबसों परस, दिलसे छूटी हवा हिरस।
भेद पाया सिरर हक, मासूकी दरिया बीच हुआ गरक।। १३ ।।

श्री प्राणनाथजी के चरणों की कृपा से यदि कुलजम सरूप की वाणी का ज्ञान मिल गया, तो उसके दिल से माया की सब चाहना मिट जाएगी और जब श्री राजजी महाराज के दिल, अर्थात् मारफत सागर के ज्ञान को जान लिया तो माशूक श्री राजजी महाराज के इश्क रूपी सागर में मोमिन मग्न हो गए।

सो ए रोसन जहूर निसान, खूबी नूर बिलंद गलतान।
एह बात जिनोंने पाई, बीच तेहेकीक के फुरमाई।। १४ ।।

कुलजम सरूप की वाणी से अब पच्चीस पक्ष की पहचान हुई और उसमें गर्क हो गए। इस सुख को जिन्होंने निश्चय करके पाया, निश्चित ही मोमिन हैं। यह कुरान में लिखा है।

Nijanand App

अव्वल एही है निमाज, जो गुजरे साहेब सिरताज।
मिले वाहीके तालिब, हुआ चाहिए दोस्त साहेब।। १५ ।।

सबसे अव्वल दर्जे की नमाज यही है कि श्री प्राणनाथजी महाराज की सेवा-बन्दगी में सारा समय व्यतीत हो। जो इस तरह से प्रेम से सेवा की चाहना करते हैं, वही खुदा के सच्चे दोस्त मोमिन होते हैं।

जब तें एह आसा मेटी, तब तो तूं साहेबसों भेंटी।
जो लों कछू देखे आप, तो लों साहेब सो नहीं मिलाप।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी आतम! जब तेरे से यह माया मोह छूट जाएगा, तब तेरा श्री राजजी महाराज से मिलन होगा। जब तक तेरे अन्दर अहंकार है कि मैं कुछ हूं, तब तक धाम धनी से मिलन नहीं होगा।

जो लों कछुए आपा रखे, तो लों सुख अखण्ड न चखे।
तसबी गोदड़ी करवा, छोड़ो जनेऊ हिरस हवा।। १७ ।।

जब तक तुम अपनापन (अहंकार) न छोड़ोगे तब तक अखण्ड सुख की प्राप्ति न होगी, इसलिए अपनी जाति वाली अलग पहचान कराने वाले आडम्बर माला, गुदड़ी, चिप्पी और जनेऊ इत्यादि माया की सभी चाहना छोड़ दो।

दोऊ जहान को करो तरक, एक पकड़ो जो साहेब हक।
या हंस कर छोड़ो या रोए, जिन करो अंदेसा कोए।। १८ ।।

हिन्दू-मुसलमानपना दोनों को छोड़कर निजानन्द सम्प्रदाय के रास्ते पर चलो जो सत्य का मार्ग बताता है। हंसकर अपना हिन्दू मुसलमान पंथ झूठ का रास्ता छोड़ो, तो अच्छा रहेगा। नहीं तो रो-रोकर छोड़ना पड़ेगा। इसमें किसी तरह का संशय नहीं है।

जो ए काम तुमसे होए, तब आई वतन खुसबोए।
और फैल झूठे जो कोई, काफर गुस्से सों कहे सोई।। १९ ।।

यह काम यदि तुम कर सकोगे, तो तुम्हें परमधाम के आनन्द मिलने लगेंगे। जो झूठे लोग हैं, वह दिखावे के लिए पाठ, पूजा, मेला, भंडारा करते हैं। वह अपने मान और शान की चाहना से करते हैं। उन लोगों को काफिर और बेईमान कहा है।

केहेत इमाम केसरी, खुदा इन वास्ते नई आयत करी।
खासा सोई है बुजरक, ए साहेब कहे बेसक।। २० ।।

केसरी नाम के इमाम ने अपनी किताब में लिखा है कि खुदा ने मोमिनों के वास्ते कुलजम सरूप की नई अखण्ड वाणी दी है, इसलिए यह मोमिन सबसे बड़ी बुजरकी वाले हैं और सबसे अच्छे हैं।

और जो कोई साहेब सों फिरे, काम दुनी का दिल में धरे।
याही में पावे आराम, सोए रहे छल बाजी काम।। २१ ।।

यदि कोई श्री प्राणनाथजी की वाणी को न मानकर दुनियां के काम में चित्त रखता है, वह उसी को सुख जानकर संसार के छल-कपट में लगा रहता है।

Nijanand App

साफ कौल इनोंके फैल, यामें नाहीं जरा मैल।
ऐसी जो कोई धनी मिलक, तिनों जगात देनी हक।। २२ ।।

मोमिनों की कहनी, करनी और रहनी, इश्क, ईमान, सेवा, बन्दगी, कुर्बानी सभी निर्मल हैं। इनमें दुनियां की मैल (काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, बदफैली) जरा भी नहीं है। इस तरह की जो निर्मल परमधाम की आत्माएं हैं, उन्हें भी श्री राजजी महाराज के चरणों में तन, मन, धन से कुर्बानी करनी है। यही उनकी जकात (दान) है।

देना है ठौर बुजरक, आप सदका देना बलक।
छोटा बड़ा जो नर नार, ए सबन पर है करार।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल सबसे महान् हैं, जिन पर अपनी खास कुर्बानी करनी है। छोटे हों या बड़े, स्त्री हों या पुरुष, सभी को इस तरह दृढ़ निश्चय से कुर्बान होना है।

ऐसी गिरो जो दरगाही, ताए रखना आप दृढ़ाई।
जेती बातें हैं हराम, ए नजीक नाहीं तिन काम।। २४ ।।

अखण्ड परमधाम के मोमिनों की जो ऐसी जमात है, उन्हें अपना दृढ़ विश्वास श्री प्राणनाथजी के चरणों में रखना है, दुनियां की जितनी भी झूठी और बुरी बातें हैं मोमिन उनके नजदीक ही नहीं जाते।

या अपना या बिराना, सब परहेज किया दिल माना।
तिस वास्ते ऐसी जानी, हाथ साहेब के बिकानी।। २५ ।।

यह मेरा है या तेरा है, इसको मोमिन दिल से ही हटा देते हैं। ऐसी ब्रह्मआत्माएं श्री राजजी के चरणों में बिक गईं (फिदा हो गईं), अर्थात् इनकी बन्दगी कबूल हो गई, ऐसा समझना।

दाहिनी तरफ जो है हक, ए लड़कियां तिनकी मिलक।
निगाह रखे जानें सुपना, इंद्रियों से आप अपना।। २६ ।।

मेयराजनामा में रसूल साहब ने मेयराज के समय श्यामा महारानी को अर्श में अपनी दाहिनी तरफ देखा। यह बारह हजार लड़कियां मोमिनों को कहा है। यह खेल में श्यामा महारानी के साथ आई हैं। वह इस खेल को झूठे सपने के समान जानते हैं और अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को काबू में रखते हैं।

इन भांत किया दिल धीर, उपजे नहीं कोई तकसीर।
इन भांतकी जो है औरत, तिन पाया रोज सरत।। २७ ।।

इस तरह से माया-मोह के अवगुणों से हटकर जो श्री प्राणनाथजी की सेवा-बन्दगी में लगे रहते हैं, उनके ऊपर कोई भूल नहीं होती और कोई गुनाह नहीं लगता। इस तरह की जो अंगना हैं, वह मोमिन हैं। उन्होंने ही खेल में श्री राजजी महाराज का दर्शन प्राप्त किया और कयामत की जानकारी पाई।

और सुख ना नफसों आराम, और रह्या न चाहें बेकाम।
और जेता कोई बद काम, सो नफसानी हिरस हराम।। २८ ।।

यह मोमिन इन्द्रियों का सुख नहीं चाहते और बेकार भी नहीं रहना चाहते। पल-पल धनी के चरणों में मग्न रहना चाहते हैं। जितने भी दुनियां में बदफैली के काम हैं, वह झूठी इन्द्रियों की चाहना जानकर मोमिन छोड़ देते हैं।

Nijanand App

जो ए काम ढूंढ़े बदफैल, काफर चाहे उलटी गैल।
ऐसे जो हैं सितमगार, पाया न समया हुए खुआर।। २९ ।।

रात-दिन काफिर लोग बदफैली, खराबी, नीच चालचलन, मारना, पीटना, लूटने, ठगने का काम पेट भरने के लिए ढूंढते फिरते हैं और ऐसे उलटे रास्ते पर चल रहे हैं। ऐसे जुल्म करने वाले जो लोग हैं, उनको श्री प्राणनाथजी महाराज के आने का कुछ भी लाभ नहीं मिला। चौरासी लाख योनियों में भटकने के लिए अपने को बरबाद कर लिया।

और जो कोई पाक गिरो आकीन, किया अमानत बीच अमीन।
इत कही जो इसारत, ए जो पाक कही उमत।। ३० ।।

इश्क और ईमान से भरे हुए जो पाक (साफ) मोमिन हैं, उनके दिलों में खुदा की बैठक है। यह मोमिन खुदा की अमानत हैं। ऐसे मोमिनों के सिरदार श्यामा महारानी हैं। यह बात जो कुरान में इशारतों में लिखी है, वह मोमिनों के वास्ते ही कही है।

ए पैदास अमानत हक, इत रोजा रबानी बेसक।
याही बीच निमाज असल, रखे आपा कर गुसल।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज की अमानत यह मोमिन संसार में आए हैं। इस खेल में वह श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान कर अपनी आत्मा से रोजा रखेंगे, अर्थात् अपने को धनी के चरणों में समर्पित करेंगे। इन्हीं की नमाज रूह की होगी। यह अपने गुण, अंग, इन्द्रियों की चाहनाओं को श्री कुलजम सरूप की वाणी से धोकर साफ कर लेंगे।

इनके साथ बीच हक, कोई बांधे कौल खलक।
निगाह रखे खड़ा रहे आप, सूरत आयत करे मिलाप।। ३२ ।।

इन मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज अर्श कर बैठे हैं। दुनियां के अगुओं ने अपने-अपने ग्रन्थों में अपने-अपने तरीके से लिखा है। यह मोमिन अपने गुण, अंग, इन्द्रियों पर सदा निगाह रखते हैं और ईमान पर खड़े रहते हैं। आपस में बैठकर चौपाइयों पर शहूर करते हैं।

कोई निगाह रखे निमाज करे, हमेसां कबहूं ना फिरे।
रखे अदब बंदगी सरत, फुरमाया अदा सोई करत।। ३३ ।।

जो मोमिन हैं वह अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में करके बन्दगी, चितवन करते हैं। कितने भी कष्ट आएं, वह ईमान से नहीं गिरते। सदा कुलजम सरूप की वाणी के अनुसार चलते रहते हैं और श्री प्राणनाथजी की अदब के साथ सेवा में हाजिर रहते हैं।

मूलथें बंदगी करे जिकर, करे सिफत निकोई आखिर।
ए जो मुतकी मुसलमान, करी इसारत ऊपर ईमान।। ३४ ।।

मोमिन श्री प्राणनाथजी महाराज को परमधाम के साक्षात् श्री राजजी महाराज समझकर सेवा करते हैं। वह मोमिन हैं। जो ईश्वरीसृष्टि हैं, वह कर्मकाण्ड को छोड़कर ईमान से बन्दगी करते हैं।

बंदगी एही है बुजरक, दूजी पाक गिरो बीच हक।
गिरो मोमिन जमे करें, छे सिफतें वारसी धरें।। ३५ ।।

सबसे बड़ी बन्दगी मोमिनों के बीच है। दूसरी ईश्वरीसृष्टि के बीच। मोमिनों की जमात छः सिफतों (मेहर, इलम, इश्क, ईमान, जोश, हुकम) को दिल में संभाल कर रखते हैं।

Nijanand App

और जेती कोई वारसी नाम, सो ना पकड़ें हाथ हराम।
जिनों किया साहेब तेहेकीक, लई मिरास अल्ला नजीक।। ३६ ।।

जो संसार की सम्पत्ति दुनियां वाले अपने नाम कराए बैठे हैं, इनको मोमिनों ने नाचीज, मुरदार समझकर छोड़ दिया। जिन्होंने श्री प्राणनाथजी को साक्षात् समझकर बन्दगी की है, उन्हें धाम धनी श्री राजजी महाराज के नजदीक होने का लाभ मिला।

जिनों भिस्त बिलंदी पाई, गिरो बड़े मरातबे पोहोंचाई।
लई औरों भिस्त मीरास, जो रहे मोमिन बीच विलास।। ३७ ।।

आप श्री प्राणनाथजी महाराज ने अखण्ड परमधाम की जानकारी देकर अपनी जमात मोमिनों को भी परमधाम के सुख की पहचान कराई। दूसरी जमात ईश्वरीसृष्टि की है। उन्होंने मोमिनों की सेवा करके अखण्ड सुख प्राप्त किया। यह वही ईश्वरीसृष्टि है जिन्होंने रासलीला में मोमिन के एक-एक तन में दो-दो बैठकर धनी के विलास का आनन्द लिया।

बिना मोमिन ए जो और, ताको दोजख भिस्त बीच ठौर।
और काफर दोजखमें जल, देखें भिस्ती मरें जल।। ३८ ।।

इन मोमिनों और ईश्वरीसृष्टि के अतिरिक्त वह अपने अभिमान (बड़ाई) के कारण दोजख की अग्नि में जलकर अखण्ड बहिश्त में कायमी पाएंगे। यह काफिर लोग दोजख में जलते हुए मोमिन की शान को देखकर और भी ईर्ष्या की अग्नि में जल मरेंगे।

भिस्ती देखें दोजखियों दुख, देखें मोमिन होवे सुख।
यों कह्या बीच मिसल जादिल, पावे ईमान बीच मिसल।। ३९ ।।

मिसल जादिल किताब में लिखा है कि मोमिन दोजखियों को दुःखी होते देखेंगे, तो उनकी नजर से ही उनको दुःख से छुटकारा होकर प्रेम, इश्क, भक्ति मिल जाएंगे।

जो सके ना सांच कर, सो जले दोजख माहें काफर।
भिस्त दोजखी दूरथें देखें, त्यों त्यों जलें आप विसेखें।। ४० ।।

जिस किसी ने श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप को नहीं पहचाना, वह काफिर लोग दोजख की अग्नि में जलते हैं। मोमिनों के वह अखण्ड सुख, चर्चा, चितवन, प्रेम-भाव और सेवा को दूर से देखते हैं। वैसे-वैसे ही उनको और अधिक दुःख होता है।

ए जो कहे भिस्त वारस, रेहेने वाले भिस्त हमेस।
इन आदम की पैदास, किया बीच खलक के खास।। ४१ ।।

परमधाम के वारिस मोमिन हैं। वह सदा परमधाम में रहने वाले हैं। आदम श्री देवचन्द्रजी के नजरी सुपुत्र मेहराज ठाकुर (श्रीजी) को खुदा ने दुनियां के बीच अखण्ड सुख देने वाला सिरदार बनाया है।

खैंच किया सबों के आगे, मोमिन इनपे पेसवा लागे।
बीज मिट्टी दुनियां की न्यात, पर ए पाक साफ कही जात।। ४२ ।।

दुनियां में जितने भी पंथ, धर्म, स्वर्ग, निराकार को मानने वाले हैं, उन सबमें से निकालकर मोमिनों को परमधाम की कुलजम सरूप की वाणी दे दी, इसलिए मोमिन इनको अपना धाम का धनी पहचान कर समर्पित हो गए। श्री प्राणनाथजी का शरीर दुनियां वालों की तरह पंच तत्व का है, परन्तु यह समस्त दुनियां की चाहनाओं से दूर है, इसलिए पाक-साफ कहा है।

Nijanand App

एक किया इसकी नकल, दूजा पाक कह्या असल।
आया इन तरफ बहार, जिनों पकड़्या पाक करार।।४३ ।।

श्री देवचन्द्रजी के दो पुत्र हैं। एक बिहारीजी तथा दूसरे मेहराज ठाकुर। बिहारीजी नकली हैं और दूसरे स्वरूप श्रीजी को असली कहा जाता है। इनके द्वारा ही कुलजम सरूप की वाणी मोमिनों के वास्ते आई है। स्पष्ट है कि इन्होंने ही श्री देवचन्द्रजी के चलाए निजानन्द सम्प्रदाय को आगे बढ़ाया।

नुस्खे रेहेमत मदतगार, इन ठौर भया उस्तुवार।
तीन सरूप की एह बयान, सो ए कहे एक के दरम्यान।।४४ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर से इनके पास तारतम ज्ञान आया। इसकी शक्ति से इन्होंने कुलजम सरूप की वाणी को जाहिर किया। बसरी, मलकी और हकी जो तीन सूरतें बताई हैं, वह तीनों श्री (मेहराज ठाकुर) प्राणनाथजी के तन में आ गईं।

सिफत तीनोंकी जुदी कही, सो सब बुजरकी एक पर दई।
ज्यों बसरी मलकी हकी, त्यों रसूल रूहअल्ला इमाम पाकी।।४५ ।।

बसरी, मलकी हकी तीनों स्वरूपों की सिफत अलग-अलग बताई। अब इन तीनों स्वरूपों की साहेबी हकीकत और मारफत के ज्ञान से तथा परमधाम की जितनी बड़ी साहेबी है, वह सभी श्री राजजी महाराज ने इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को दी है। बसरी सूरत रसूल साहब ने शरीयत का धर्म चलाया और कुरान लाए। रूह अल्लाह ने जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम दिया और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कुलजम सरूप की वाणी से सबको पाक-साफ किया।

न पावें ऊपर माएने जाहेरी, ए मगजों सों इसारत करी।
एक सरूप अवस्था तीन, ज्यों लड़का ज्वान बुढ़ापन कीन।।४६ ।।

यह रहस्य ऊपर के मायने लेने से समझ में नहीं आते। यह बातें कुरान में इशारतों में कही हैं और एक स्वरूप की तीन अवस्थाएं हैं। बसरी स्वरूप बचपने का ज्ञान है। मलकी स्वरूप श्री श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी) ने किशोर अवस्था का शास्त्र, पुराण का सार तारतम ज्ञान दिया। हकी सूरत इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कुरान, हदीस, वेद, शास्त्र सभी धर्मग्रन्थों से पूरी पहचान कराई। बुढ़ापे में ज्ञान ही अधिक होता है, इसलिए हकी सूरत को वृद्धावस्था वाला कहा है।

तीन सरूप चढ़ती उतपनी, चढ़ती चढ़ती कही रोसनी।
खोली राह आखिर बागकी, तंग सेती पोहोंचे बुजरकी।।४७ ।।

इन तीनों स्वरूपों बसरी, मलकी, हकी के ज्ञान की रोशनी को चढ़ता-चढ़ता बताया है। श्री प्राणनाथजी महाराज ने अखण्ड परमधाम के बगीचों की सैर करा दी। नौतनपुरी में श्री मेहराज ठाकुर के रूप से इन्द्रावती को पाया और फिर पन्नाजी में आकर कुलजम सरूप की वाणी आने से पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द अक्षरातीत धाम के धनी अल्लाह ताला बन गए।

बिध बिधकी न्यामत पोहोंचाई, और कई तरबियत फुरमाई।
लड़के सेती पोहोंचे ज्वान, रख्या कदम हक बयान।।४८ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुलजम सरूप की वाणी (परमधाम की सब न्यामतों का खजाना) बख्शा। कुरान पुराण की गवाहियां देकर अब सारी दुनियां को पारब्रह्म की पहचान करा रहे हैं। नौतनपुरी में बालक स्वरूप थे। श्यामा महारानी देवचन्द्रजी ने तारतम ज्ञान से जवान बना दिया। उसके बाद कुलजम सरूप की वाणी पन्नाजी में आने से बुजुर्ग बन गए।

Nijanand App

पाई सेखी हुए बुजरक, नेक न सक करते हक।
लायक खुदाएके करी सिफत, पैदा किया अर्स दोस्त।।४९।।

श्री राजजी महाराज की कृपा से जब कुलजम सरूप की वाणी मिली, तो बुजरक कहलाए। अब यह संसार के झूठे जीवों को कुलजम सरूप की वाणी का ज्ञान देकर अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे। इसके अन्दर कोई संशय नहीं है। यह श्री प्राणनाथजी महाराज साक्षात् पारब्रह्म हैं, ऐसी इनकी पहचान लिखी है। लिखा है कि खुदा ने अपना सच्चा दोस्त खेल में (फानी दुनियां में) भेजा है।

कुरसी फिरस्ते लोहकलमी, कायम सितारों आसमान जिमी।
पीछे आदमके पैदा भया, जात पाक से दोस्त कह्या।।५०।।

खुदा ने विष्णु भगवान को आसमान-जमीन के बीच बैकुण्ठ का राज्य देकर खेल बनाया है। दुनियां के जीव उस विष्णु भगवान और उनके देवी-देवताओं को ही अपना परमात्मा मानते हैं। ऐसे संसार में श्यामा महारानी देवचन्द्रजी के बाद इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को प्रगट किया, जिन्हें दुनियां की जाति-पाति और सब ख्वाहिशों से मुक्त खुदा का दोस्त कहा है।

बुजरकी दलील फुरमाई, आदम पर बकसीस बड़ाई।
मेहेर करी ऊपर सूरत, इन मेहेर की करी न जाए सिफत।।५१।।

खुदा ताला के हुकम से कुरान-पुराण में श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी महाराज की बड़ी महिमा गाई है। इन देवचन्द्रजी (श्यामा महारानी) को श्यामजी के मन्दिर में तारतम ज्ञान (पराशक्ति जागृत बुद्धि के ज्ञान) की बख्शीश हुई। श्री राजजी महाराज की जो यह मेहर श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी) पर हुई। उसकी सिफत वर्णन से बाहर है।

जो कह्या इन सेती नूर, सच्चे सूर कहावें जहूर।
इनका रंग है तकव्वल, सिर बिलंदी ताज सकल।।५२।।

श्री श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी महाराज) के तारतम ज्ञान के तेज से श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुलजम सरूप की वाणी को जाहिर किया। इनके प्रेम का रंग पक्का है, छूटने वाला नहीं है। दुनियां में जितने भी धर्म (सम्प्रदाय) हैं, उनके ऊपर इनका ज्ञान कलश के समान चमक रहा है।

और मिले गिरदवाए लोक, हुआ बुजरकी का गले में तोक।
ए बकसीस और से रोसन, उन सुने गैब के सुकन।।५३।।

श्री प्राणनाथजी के चरणों में बारह हजार ब्रह्मसृष्टि और चौबीस हजार ईश्वरीसृष्टि का मेला होगा। इनके बीच श्री प्राणनाथजी को परमधाम ले जाने के दायित्व की शोभा मिली है। यह बख्शीश इन्हें श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी से मिली, जिन्हें श्यामजी के मन्दिर में परमधाम का ज्ञान मिला।

एह बात ए पैदास कही, सो सिफत सब महंमद पर भई।
ए तीनों सिफतों भया रसूल, ए सजीवन मोती कह्या अमोल।।५४।।

बसरी, मलकी और हकी इन तीनों के ज्ञान की पहचान कराई गई। इन सबकी सिफत इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की है। मुहम्मद के तीनों स्वरूप की साहेबी एक श्री प्राणनाथजी में आई, इसलिए इनको अनमोल मोती कहा।

Nijanand App

इन मोती को मोल कह्यो न जाए, ना किनहूं कानों सुनाए।
सोई जले जो मोल करे, और सुनने वाला भी जल मरे।।५५।।

श्री प्राणनाथजी को अनमोल मोती कहा है। इस मोती का मोल न जबान से किया जा सकता है और न कानों से सुना जा सकता है। जो इनका मोल करे वह जल मरेगा। सुनने वाला भी जल मरेगा, अर्थात् संसार की किसी वस्तु से उनकी उपमा नहीं दे सकते।

बाजे कहे साहेब इस्क, सबसे जुदा ए आदम हक।
जैसे जात पाक सुभान, एह मरातबा किया बयान।।५६।।

कोई-कोई उनको इश्क का बादशाह मानते हैं और कोई इन्हें दुनियां के सभी धर्म सम्प्रदाय से अलग अखण्ड परमधाम का ज्ञान का देने वाला पारब्रह्म का स्वरूप मानते हैं। जिस तरह से पारब्रह्म परमात्मा की कोई जाति नहीं होती, निर्मल होते हैं, वही दर्जा श्री प्राणनाथजी को प्राप्त है।

हद सबों की करी जुबांन, क्या कोई कहे ए सिफत जहान।
अब कहूं मैं इनकी बात, जो कह्या आदम पाक जात।।५७।।

कुलजम सरूप की वाणी से मोमिनों को परमधाम, ईश्वरीसृष्टि को अक्षरधाम और जीवसृष्टि को अखण्ड मुक्ति देकर बहिश्तों में कायम करेंगे। अब छत्रसालजी कहते हैं कि कुरान, हदीसों के वर्णन में जिस आदम (देवचन्द्रजी) को पाक कहा है, उनकी हकीकत बताती हूं।

सो अफताली महंमदका भया, जो आदम ऐसा बुजरक कह्या।
ए पैदा हुआ कारन महंमद, एह रसूलकी कही हद।।५८।।

ईसा रूह अल्लाह, श्यामा महारानीजी का दूसरा जामा श्री प्राणनाथजी महाराज आखिरी जमाने के खाविंद हैं। वह संसार के सब जीवों को अखण्ड मुक्ति प्रदान कर बहिश्तों में कायम करेंगे। रसूल साहब ने जो कुरान, हदीसों में कहा था कि खुदा आएगा, उसी के कहे अनुसार मोमिनों के बीच कुरान, हदीसों के छिपे रहस्य खोलकर इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी जाहिर हुए। मुहम्मद साहब की तीन सूरतें हैं। श्री प्राणनाथजी के अन्दर ही यह तीनों हैं।

जो सिफत आदम की कही न जाए, तो महंमद की क्यों कहूं जुबांए।
ए दोऊ सिफत सरूप जो एक, तीसरा साकी इनमें देख।।५९।।

सतगुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज श्यामा महारानी की सिफत महान है, जो वर्णन करने में नहीं आती। रसूल साहब जो कुरान लाए हैं, उनकी सिफत कैसे कही जाए? यह दोनों स्वरूप एक ही हैं और कुलजम सरूप की वाणी से इश्क रस पिलाने वाले श्री राजश्यामाजी प्राणनाथजी के तन में बैठे हैं।

ईसा आदम महंमद नाम, ए तीनों एक मिल भए इमाम।
और जो कहे मुरदों की भांत, साकी प्याले होसी कल्पांत।।६०।।

रसूल साहब, श्यामा महारानी और हकी सूरत तीनों मिलकर इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी कहलाए। बाकी दुनियां मुर्दों की तरह है, जो कुलजम सरूप की वाणी का रस पान करके कयामत के समय बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति पाएगी।

Nijanand App

सो सारे फना आखिर, जेती वस्त कही जाहेर।
जिन माएने लिए ऊपर, सो ए वजूद को रहे पकर।।६१।।

यह संसाार जो दिखाई दे रहा है, वह अन्त में सब नष्ट हो जाने वाला है। जिन जीवों ने कुरान को ऊपर की नजर से देखा, वह अपने शरीर की ही ठाट-बाट में लगे हैं।

जाहेर जिनकी भई नजर, कयामत बदला कह्या तिन पर।
करे जिमीन सात आसमान, वास्ते उमत महंमद दरम्यान।।६२।।

जिनको संसार की चाहना है, आखिर के समय में उनको कर्मों के अनुसार ही दोजख की अग्नि में जलकर मुक्ति प्राप्त होगी। खुदा ने मृत्युलोक और सात आसमान बैकुण्ठ तक बनाए हैं। वह श्यामा महारानी के मोमिनों को खेल देखने के वास्ते ही बनाए हैं।

सात हजार राह फरिस्ते, करी इसारत दुनी कयामते।
अब खुदाए ने यों कर कह्या, मैं आसमान जिमी से जुदा रह्या।।६३।।

फरिश्तों का रास्ता सात हजार वर्ष का होगा। यह कयामत का निशान इशारों में कहा है—(रसूल साहब के आने तक ५८४७ वर्ष ६३ वर्ष उमर के ९९० देवचन्द्रजी के आने तक और सौ वर्ष लैल के सम्वत् १७३५ में सात हजार पूरे हुए)। कुरान में साफ लिखा है कि मैं संसार, इस आसमान, जिमी से अलग हूं।

जेती कोई पैदाइस कुंन, मोको तिन थें जानो भिंन।
मैं ना इनमें ना इनके संग, बेसुध कहे सब इनके अंग।।६४।।

कुंन शब्द कहने से जो सृष्टि पैदा हुई है, मुझे उससे अलग समझो। मैं इनके बीच नहीं रह सकता। इनके अंग-अंग में माया की ही चाहना भरी है।

मेरे इनसों नहीं मिलाप, मैं बेखबरों में नाहीं आप।
मैं इनों सों नहीं गाफिल, ए दुख सुख में रहे मिल।।६५।।

यह दुनियां वाले सभी जीवों को मेरी सुध नहीं है। मैं इनके साथ नहीं रह सकता। मैं इनकी हरकतों को अच्छी तरह जानता हूं। यह झूठे संसार में ही अपने को सुखी मानते हैं।

सिरक इनों की मैं जानों सही, बिना खबर याकी जरा नहीं।
ऊपर से उतरया पानी, तिन से नेकी बंदों की जानी।।६६।।

यह मेरे मोमिन देवी-देवताओं, आग, पानी, पत्थर और झूठी गद्दियों की पूजा कर रहे हैं। यहां इनकी हकीकत मैं अच्छी तरह जानता हूं। परमधाम से कुलजम सरूप की वाणी आने पर ही मैंने अपने मोमिनों की असल पहचान की।

मरतबा इनों देऊं उस्तुवार, इन पानी से होए करार।
इबन अबास करे बयान, आया पानी इन दरम्यान।।६७।।

मैं अपने मोमिनों को बड़ा मान देता हूं, क्योंकि उनको मेरी वाणी से आराम मिलता है। इबन अबास अपनी किताब में लिखते हैं कि यह अखण्ड ज्ञान मोमिनों के वास्ते आया।

Nijanand App

पांच नेहेरें जबराईल पर, आइयां भिस्त से उतर।
पांचों कही जुदे जुदे ठौर, बिना इमाम न पावे और।। ६८ ।।

अखण्ड परमधाम से जबराईल के द्वारा पांच बड़ी नहरें आई हैं। और अलग-अलग ठिकाने पर आईं। बातूनी में बृज के स्वरूप, रास के स्वरूप, रसूल साहब, श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी) और प्राणनाथजी महाराज हैं। इस रहस्य को इमाम मेंहेंदी के बिना कोई नहीं बता सकता।

उतरियां सरूप पांच चसमें, रहियां एक झिरने सच में।
हिंद बलख और कही मिसर, कौल पाया करार पत्थर।। ६९ ।।

यह पांच नहरें ही पांच स्वरूप हैं जो एक महामति के दिल में सब इकट्ठे हुए हैं। हिन्द-पन्नाजी, बलख, नौतनपुरी मिसर, अरब में जो वाणी आई है, उससे पत्थर दिल जीवसृष्टि को भी आराम मिला।

ए मेला हुआ आखिर दिन, तब नफा मसलहत पाया सबन।
दजला फिरात जुदी कही, जाहेरी माएने भेली न भई।। ७० ।।

कयामत के समय यह सब इकट्ठे होंगे। तब वाणी की चर्चा से सबको लाभ मिलेगा। दजला-फिरात दो नदियां इकट्ठी नहीं हुईं। यह दजला और फिरात बृज-रास की लीला है जो इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के अन्दर आकर इकट्ठी हुई हैं।

चसमें पहाड़ जारी करे, चसमें कायम पानी भरे।
कह्या जिमी ए बादल पानी, जिनसे साबित भई जिंदगानी।। ७१ ।।

परमधाम से श्री राजजी महाराज कुलजम सरूप की वाणी भेज रहे हैं। वाणी चश्मा है। पहाड़ परमधाम है। इस कुलजम सरूप की वाणी से मोमिन अपने अर्श दिल को सींच रहे हैं। श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी को बादल कहा है जो तारतम की वाणी संसार में लाए। जिस वाणी के प्रताप से संसार के झूठे जीवों को अखण्ड मुक्ति बहिश्तों में मिलेगी।

उतर्‌या पानी ऊपर ले जाए, सब कर सके जो कछू ए चाहे।
इन वीरजमें होवे आप, और दूर दुनी संग नहीं मिलाप।। ७२ ।।

परमधाम की यह आई हुई अखण्ड वाणी मोमिनों को परमधाम, ईश्वरीसृष्टि को अक्षरधाम तथा जीवसृष्टि को अखण्ड मुक्ति प्रदान करेगी। यह वाणी इतनी बलशाली है कि जो चाहे कर सकती है। श्री राजजी महाराज कहते हैं कि मैं इन्द्रावती के दिल में स्वयं बैठा हूं और दुनियां वालों से बहुत दूर हूं।

इन समें उतर्‌या आजूज, और संग इनके माजूज।
पीछे उतर्‌या जबराईल, लेवे सबको न करे ढील।। ७३ ।।

वक्त-ए-आखिरत को आजूज-माजूज जाहिर हो गए। जो दुनियां की अष्टधातु की दीवार, अर्थात् पांच तत्व, तीन गुण के संसार की उम्र को रात-दिन खाकर समाप्त कर देंगे। प्रलय के ठीक बाद बिना कुछ देरी किए जबराईल फरिश्ता तीनों सृष्टियों को परमधाम, अक्षरधाम और बहिश्तों में पहुंचा देगा।

एक मक्के का काला पत्थर, कुरान और खुदाए का घर।
और ठौर कह्या इभराम, और यार महंमद आराम।। ७४ ।।

श्री देवचन्द्रजी महाराज के नसली और नजरी दो पुत्र हैं। जिनमें गादीपति बिहारीजी महाराज कठोर पत्थर के समान दिल वाले हैं और कर्मकाण्ड पर चलने वाले हैं। नजरी पुत्र मेहराज ठाकुरजी के बीच हवसा जिसे खुदा का घर कहा है, कुलजम सरूप की वाणी उतरनी शुरू हुई। इनके दिल में ही इब्राहीम

Nijanand App

श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी महाराज) विराजमान हैं, जिनकी वाणी से रूह मोमिनों को आराम मिलता है।

पीछले जेते गए दिन, बाकी कोई न रेहेवे किन।
एक बेर फना सब किए, फेर कायम उठाए के लिए।।७५ ।।

समय बीत जाने पर पीछे कोई नहीं रह जाएगा। एक बार संसार का महाप्रलय करके फिर सबको अखण्ड बहिश्तों में पहुंचा देंगे।

ए पांचों नेहेरें कही जो पानी, जिनसे दुनियां भई जिंदगानी।
बागोंने ताजगियां पाई, सो भी पानी हादी ने पिलाई।।७६ ।।

पांच स्वरूपों के द्वारा जो परमधाम से कुलजम सरूप की वाणी आई है, सब नष्ट होने वाली दुनियां को जिन्दगी मिल गई। इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुलजम सरूप की वाणी मोमिनों को पिलाकर बगीचे जो मोमिन हैं, जागकर सावचेत हो गए। ताजगी आ गई।

सो भी कहे भिस्त के बाग, जिनसे खेती पायो सोहाग।
इनकी मैं करों तफसीर, जुदे कर देऊं खीर और नीर।।७७ ।।

यह मोमिन ही अखण्ड परमधाम के बगीचे के समान कहे गए हैं। इनके द्वारा ही संसार के सब जीव जो खेती के समान हैं, अखण्ड मुक्ति प्राप्त हुई। श्री महामतिजी कहते हैं कि अब मैं झूठ और सच का विवरण, माया और ब्रह्म के भेद बताती हूं।

उमत लाहूती कही अंगूर, दूजी जबरूती कही खजूर।
मलकूती को खेती कही, इनको बड़ाई उनथें भई।।७८ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों को मीठे अंगूर की उपमा दी है। जो ईश्वरीसृष्टि है उसे खजूर की उपमा दी है। बैकुण्ठ के पूजक को खेती कहा है। इस जीवसृष्टि को भी मोमिनों के कारण अखण्ड मुक्ति मिली।

दोऊ कायम भई उमत, उठे बीच हादी कयामत।
तीसरी कायम भई दुनियां और, तिन सबों की हज इन ठौर।।७९ ।।

कयामत के समय ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि दो जमातें अपने घर जाएंगी। तीसरी सृष्टि जो दुनियां है, जिसे अखण्ड मुक्ति प्राप्त हुई, वह सब आखिरत में आकर श्री प्राणनाथजी के चरणों में सिजदा बजाएंगे।

और दुनियां ने सब फसल पाई, उमत बाग हासिल आई।
एह खुदाए का बरस्या नूर, देखो छत्ते का जहूर।।८० ।।

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि सारी दुनियां को अखण्ड मुक्ति कायम होने का सुख मिला। मोमिन और ईश्वरीसृष्टि अखण्ड बगीचों में पहुंचीं। इस तरह से श्री प्राणनाथजी ने कुलजम सरूप की वाणी की वर्षा की।

हुआ खुदाए के हजूर, बात याही की हुई मंजूर।।८१ ।।

जो उनकी वाणी के अनुसार चला उनकी सभी बातें खुदा श्री राजजी महाराज ने स्वीकार कीं।

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ३१० ॥

Nijanand App